संपादकीय

वर्चस्व और दबाव

अमेरिका ने ईरान पर मंगलवार को फिर से कड़े प्रतिबंध लगा दिए हैं। इन प्रतिबंधों को कुछ साल पहले हुए ऐतिहासिक बहुपक्षीय परमाणु समझौते के बाद हटा लिया गया था। मई में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिका के परमाणु समझौते से बाहर होने की घोषणा की थी। बीते सोमवार को जारी कार्यकारी आदेश में उन्होंने कहा कि मिसाइलों के विकास और खाड़ी क्षेत्र में घातक गतिविधियों के व्यापक और स्थायी समाधान की खातिर ईरान पर वित्तीय दबाव डाला गया है।

अमेरिकी प्रतिबंधों के पहले चरण में ईरान की अमेरिकी मुद्रा तक पहुंच घटाने के लिए कार और कालीन समेत उसके अन्य प्रमुख उद्योगों को निशाना बनाया गया है। हालांकि, प्रतिबंध का प्रभाव ईरान पर पहले से ही दिखने लगा है। ट्रंप द्वारा समझौते से बाहर निकलने की घोषणा के बाद से ही ईरानी मुद्रा रियाल का मूल्य गिरते हुए आधे पर आ गया है।

प्रतिबंध लगाए जाने पर ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने अमेरिका पर ईरान जैसे इस्लामिक देश के खिलाफ 'मनोवैज्ञानिक युद्ध' छेड़ने का आरोप लगाया। पिछले ही हफ्ते ट्रंप ने कहा था कि वह ईरान से बातचीत के लिए तैयार हैं। इस पर ईरान में तीखी प्रतिक्रिया हुई।

ईरान के रेवलूशनेरी गार्ड के प्रमुख ने ट्रंप के प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा था कि 'ईरान, उत्तर कोरिया नहीं है जो आपके बातचीत के प्रस्ताव को स्वीकार कर ले।' जाहिर है, ऐसे बयानों ने ट्रंप को बौखला दिया। उन्होंने ईरान पर फारस की खाड़ी में नौसेना अभ्यास करने का आरोप लगाया। अमेरिका और ईरान की यह तनातनी दुनिया के शक्ति समीकरण पर गहरा असर डाल सकती है।

दरअसल, अमेरिका 2015 में सीरिया में लगे झटके को अब तक पचा नहीं पाया है। शायद वह ईरान को भी इराक बना देना चाहता हो, लेकिन यह आसान नहीं है। ईरान के प्रति ट्रंप के इस रवैये को इजरायल और सऊदी अरब जैसे अमेरिकी-खेमे के मुल्कों को छोड़कर किसी ने पसंद नहीं किया है। परमाणु समझौता तोड़ने को लेकर यूरोपीय संघ अपनी आपत्ति जता चुका है। जर्मनी का कहना है कि 'ईरान के मुद्दे पर अमेरिका का व्यवहार हम यूरोपीय लोगों को रूस और चीन के अमेरिका विरोधी रुख के करीब ले जाएगा।'

ट्रंप के कदम ने ईरान में कट्टरपंथियों और रूहानी जैसे उदारवादियों को एक कर दिया है। वहां अमेरिका के खिलाफ तमाम शक्तियां एकजुट हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ट्रंप की इस जिद ने अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता की उनकी क्षमता कमजोर की है। नॉर्थ कोरिया जैसा देश भी अब शायद ही उनकी बात मानेगा और कोई समझौता करेगा।

अमेरिकी प्रतिबंधों का दूसरा चरण 5 नवंबर से प्रभावी होगा और तब ईरान के कच्चे तेल की बिक्री पर रोक लगेगी। इससे तेल के दाम तो बढ़ेंगे ही, ईरान के चाहबहार बंदरगाह में भारत के निर्माण-कार्य पर भी बुरा असर पड़ेगा। जल्द ही हमें बहुत समझदारी से कुछ जरूरी फैसले लेने पड़ेंगे।

विपत्ति में शक्ति हासिल करने का हुनर

आपने यह अवश्य सुना होगा कि जीवन में कामयाबी और सुख- समृद्धि के लिए व्यक्ति के अंदर इंटेलिजेंस कोटिएन्ट एवं इमोशनल कोटिएन्ट का उच्च होना जरूरी है लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन सबसे भी जरूरी व्यक्ति के अंदर एडवर्सिटी कोटिएन्ट यानी कि विपत्ति सूचकांक का होना अनिवार्य है। कई बार व्यक्ति में इंटेलिजेंस कोटिएन्ट एवं इमोशनल कोटिएन्ट का सूचक उच्च होता है लेकिन तब भी वह जीवन में आशातीत प्रगति नहीं कर पाता। वहीं ऐसे व्यक्ति भी देखे जाते हैं, जिनमें इंटेलिजेंस कोटिएन्ट कम होता है लेकिन इसके बावजूद वे प्रगति करते हैं और इतिहास रच देते हैं। इसके पीछे उनका एडवर्सिटी कोटिएन्ट मजबूत होना होता है।

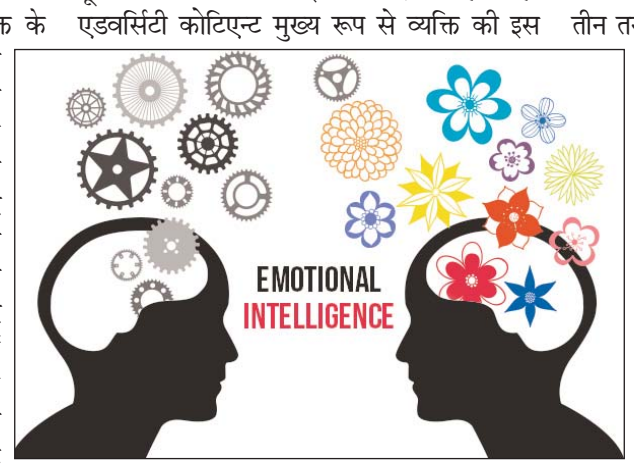

डेनियल गोलमैन अपनी पुस्तक 'इमोशनल इंटेलिजेंस' में लिखते हैं कि बुद्धि सफलता की गारंटी नहीं है। आपके पास उच्च ई.क्यू अर्थात एडवर्सिटी कोटिएन्ट होना चाहिए। विपत्ति सूचकांक वह काल्पनिक पैमाना है, जो दूसरों के साथ काम कर सकता है, जिसमें परानुभूति की योग्यता अर्थात दूसरे के भावों को समझने की क्षमता होती है। एडवर्सिटी कोटिएन्ट मुख्य रूप से व्यक्ति की इस धारणा को उजागर करता है कि वह विपत्ति का सामना किस तरह से करता है। इस संदर्भ में डॉ. स्टोल्ट्ज कहते हैं कि हर व्यक्ति में विकसित होने और ऊपर चढ़ने की मूलभूत मानवीय प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति ठीक उसी तरह होती है, जिस तरह एक व्यक्ति एवरेस्ट पर चढ़ने का प्रयास करता है। विश्व के अनेक लोग एवरेस्ट की चोटी पर विजय पाने के लिए उस पर चढ़ने का प्रयास करते हैं। उनमें तीन तरह की प्रवृत्ति के लोग होते हैं। पहले 'मैदान छोड़ने वाले।' दूसरे 'डेरा डालने वाले' और तीसरे व अंतिम 'विजय हासिल कर पर्वतारोही कहलाने वाले।'

पहली प्रवृत्ति के लोग मुश्किल समय में पहाड़ पर चढ़ना छोड़ देते हैं और हार मानकर परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं। दूसरी प्रवृत्ति के लोग पहाड़ पर चढ़ना आरंभ कर देते हैं और थकने पर किसी आरामदेह जगह पर अपना डेरा डाल लेते हैं और वहां से आगे बढ़ने को तैयार नहीं होते। जैसे ही उन्हें किसी तूफान की आशंका नज़र आती है, वे वापस नीचे की ओर जाना आरंभ कर देते हैं। तीसरी प्रवृत्ति वाले लोग पर्वतारोही कहलाते हैं और ये चोटी तक पहुंचकर अपनी कामयाबी से विश्व में इतिहास रच देते हैं। तीसरी प्रवृत्ति के लोगों में ही एडवर्सिटी कोटिएन्ट अधिक मात्रा में पाया जाता है क्योंकि इनके अंदर विपत्तियों का सामना करने की अद्भुत क्षमता होती है।

मुक्ति से ज्ञान

एक दिन माता कौशल्या अपने पुत्र भगवान श्रीराम के पास जाकर बोली-हे राम! तुम मुझे कुछ उपदेश दो, जिससे मुझे कुछ ज्ञान प्राप्त हो। श्रीराम बोले-कल प्रातःकाल आप गौशाला में जाकर बछड़ों के वाक्यों को सुनकर भली-भांति विचार करें, उसके बाद मैं आपको उपदेश दूंगा। दूसरे दिन माता कौशल्या गौशाला में पहुंच गई। उन्होंने जब गौर से बछड़ों के वचन को सुना तो वे बार-बार 'अहं मां' कह रहे थे। वह सोचने लगीं कि यह बछड़े मुझे क्या ज्ञान दे रहे हैं? उन्होंने विचार किया तो उनका अज्ञान दूर हो गया और श्रीराम के समीप आकर बोली-मैंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है कि मैं तुमसे भिन्न कभी नहीं हूं।

सुखमय बचपन के लिए भगीरथ प्रयास

इस देश की खास बात यह है कि तमाम अंतर्विरोधों के बावजूद यह आगे बढ़ता ही जाता है और उससे भी बड़ी बात है कि एकजुट होकर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कर लेता है। आज़ादी के बाद एक से बढ़कर एक संकट इस देश पर आए लेकिन सभी का समाधान निकला। चीन-पाकिस्तान के हमलों से लेकर भुखमरी तक की समस्या से हमने बखूबी मुकाबला किया। इसी क्रम में गंभीर बीमारियों से छुटकारा पाने की कई कोशिशें हुई और सफलता भी मिली।

आज़ादी के पहले प्लेग और चेचक ने लाखों लोगों के प्राण ले लिये। प्लेग के एक आक्रमण से गांव के गांव साफ हो जाते थे तो चेचक की मार से शहरवासी भी बच नहीं पाते थे। इनका आतंक इतना था कि गांवों से बड़े पैमाने पर पलायन हो जाता था। लेकिन आज़ादी के बाद इस दिशा में प्रयास हुए और 1994 तक प्लेग जैसी संक्रामक बीमारी पर काफी हद तक नियंत्रण पा लिया गया जबकि चेचक को भी 1977 में जड़ से उखाड़ फेंका गया। इसके लिए पूरे देश में कई दशकों तक टीकाकरण का काम चलाया गया। हर स्कूल में बच्चों को चेचक से बचाने के टीके लगाए गए और यह धीरे-धीरे खत्म हो गया।

उस ज़माने में जब संचार और संवाद के माध्यम बेहद कम थे, यह बहुत बड़ा प्रयास था। लेकिन उसके बाद पोलियो के खात्मे के लिए देश में जो अभियान चला वह अभूतपूर्व और ऐतिहासिक था। हर साल तकरीबन डेढ़ लाख बच्चे इस बीमारी से ग्रस्त होकर जिंदगी से लाचार हो जाते थे। देश के कोने-कोने में इसे चलाया गया और केन्द्र तथा राज्य सरकारों के अलावा सैकड़ों एनजीओ, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और जनता के हित में काम करने वाले आमजनों ने इसमें भाग लिया। अपनी तरह का दुनिया का यह अकेला कार्यक्रम था, जिसमें इतने लोग और संगठन जुड़े। नतीजा यह हुआ कि बच्चों की जिंदगी बर्बाद करने वाले इस रोग को जड़ से मिटा दिया गया। 17 करोड़ बच्चों को साल में दो बार इसकी दवा की खुराक दी गई। दुर्गम पर्वतों से लेकर राजस्थान के रेगिस्तानों में बसे गांवों के बच्चों को भी यह दवा दी गई। 2014 में भारत को इस खतरनाक बीमारी से मुक्त घोषित कर दिया गया।

अब फिर ऐसा ही एक अभियान मीजल्स यानी खसरे को जड़ से खत्म करने के लिए चल रहा है। इस सदी की शुरुआत तक हर साल लगभग तीन लाख बच्चे इस बीमारी की चपेट में आकर काल कलवित हो जाते थे। टीकाकरण शुरू होने के बाद यह संख्या घटी है और अभी भी लगभग एक लाख बच्चों की मौत हो रही है। जो बच भी जाते हैं, उन्हें अंधापन से लेकर अन्य कई तरह की बीमारियों से ताउम्र जूझना पड़ता है।

दुनिया भर में जितने बच्चे इस खतरनाक बीमारी का शिकार होते हैं, उनमें 74 प्रतिशत भारत में ही होते हैं।

लौहपुरुष-सी मां

मां क्या होती है, यह हम सभी जानते हैं, लेकिन जब तक वह हमारे साथ होती है, हमें उसके होने का एहसास नहीं होता, उसके होने की कद्र नहीं होती। फिर जब वह हमसे दूर चली जाती है तब हमें पता चलता है कि मां क्या होती है। यूं तो हर मां अपने बच्चों के साथ सदैव खड़ी रहती है लेकिन कुछ माएं ऐसी भी होती हैं जो समाज का डर दिखाकर चुप करा देना चाहती हैं। लेकिन मैं एक ऐसी मां से मिली जिसने अपने पति के रहते हुए भी अपने बच्चों का साथ कभी नहीं छोड़ा और पति के चले जाने के बाद भी।

हर किसी के बस का नहीं होता यह काम, विशेष रूप से एक स्त्री के लिए तो बहुत ही मुश्किल है। लेकिन फिर भी उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया और उन्हें अपनी ज़िंदगी अपने तरीके से जीने की आज़ादी प्रदान की। समाज के तमाम तानों-बेतानों के बीच यदि एक लड़की की विधवा मां उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले तो उससे बड़ा आक्षेप तो इस समाज में कोई दूजा हो ही नहीं सकता। इसलिए अच्छी ख़ासी पढ़ी-लिखी नौकरीपेशा लड़की से कोई महज इसलिए शादी नहीं करना चाहता कि वह बहुत माडर्न है, सही को सही और गलत को गलत कहने की हिम्मत रखती है। क्यूं भाई? क्योंकि ऐसी लड़कियों आप दबा के नहीं रख सकते। उन्हें घरेलू हिंसा का शिकार नहीं बना सकते। उसके मां-बाप से दहेज की मांग नहीं कर सकते। इसलिए ऐसी लड़कियां अच्छे घरों की बहू नहीं बन सकतीं।

बेटी की शादी सही समय पर न हो तो मां को चिंता तो हो ही जाती है। अचानक एक दिन खबर आती है, मेरी बेटी की शादी है आप सब ज़रूर आना तो लोग शादी में यह देखने पहुंचते हैं कि ऐसी लड़की के लिए लड़का मिला कहां से। बहू की कामना के लिए वही मां जब आलीशान घर बनवाती है। बेटे की नौकरी लगते ही उसे अकेले रहना होगा, यह सोचकर बहू के सपने लिए जब उसकी छोटी सी गृहस्थी सजाती है। बेटे की नौकरी ज्वाइन करते ही ऐसी बीमार पड़ती है कि एक छोटे से बुखार से कहानी शुरू होकर हमेशा के लिए खत्म हो जाती है।

खाना खजाना

मानसून में रहें हेल्दी हर्बल कैफीन-फ्री ड्रिंक के साथ

कितने लोगों के लिए - 5

सामग्री -

तुलसी के पत्ते - 1/4 कप, गुड़-4 टीस्पून, नींबू का रस-1 टेबलस्पून, पानी- डेढ़ कप

विधि -

तुलसी के पत्ते और गु? को एक साथ मिक्सकर लें और ग्राइंडर में पीसकर दरदरा पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को एक बाउल में निकालकर अलग रख दें। अब एक सॉसपैन में डे? कप पानी उबालें और इसमें नींबू का रस और तुलसी-गु? का पेस्ट डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें और दो मिनट तक उबाल लें। फिर इसे छन्नी से छान लें और गरमा-गरम सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकुल, चुनी हुई 3. राजाओं के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. वाद्ययंत्र आदि बजाने वाला 10. सहारा, सहायक वस्तु 11. शर्म, लाज, हया 12. मक्खन, माखन 14. श्रीमती राबड़ी देवी इस प्रदेश की मुख्यमंत्री हैं 15. चंद्रमा, रजनीश, चांद 18. पुस्तक 20. अवधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा-सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूरत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे

1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदु विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह ढकने का कपड़ा, घुंघट 8. चंदन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़प्पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, मूर्ख, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृषक 19. अधिक, ज्यादा।

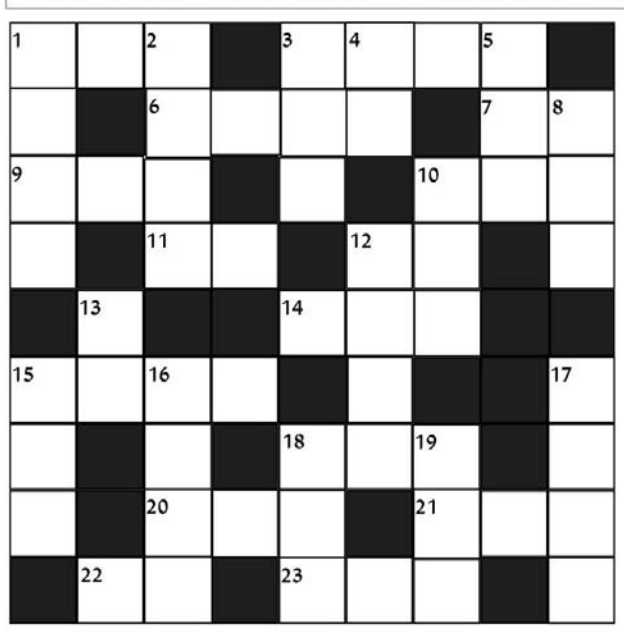

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 93 का हल

ज	ल		आ	वा	जा	ही		
मा		खू	ब		दू	र	स्थ	
ना	दा	न		सा	ग		ल	क्ष्य
	न	ख		त	र	ल		
	वी	रा	न			च	ट	क
	र	ब		आ	ज	क	ल	
			आ	ग		दा	ना	
	अ	ग	र	म	ग	र		क्रो
भा	भी		ती	न			व	ध

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.93 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेषः आज किसी कारण से आपको गुस्सा आ सकता है। ध्यान रखें कि इस गुस्से की वजह से आपके व्यवसाय या फिर नौकरी में हानि न होने पाए। दिन भर आलस्य हो सकता है।

वृषभः दिन भर काफी बिजी शेड्यूल रहेगा। शाम तक अच्छी खबरें मिलेंगी और आप फायदे में भी रहेंगे। प्रफेशनल मामले में सावधानी बरतने से होने वाले नुकसान को बचाया जा सकता है। निवेश के मामले में आज फायदा उठाया जा सकता है।

मिथुनः आज का दिन उत्सुकता से भरा है, दोपहर तक कोई अच्छा समाचार मिल सकता है। विद्यार्थी अपना ज्यादा से ज्यादा ध्यान पढ़ाई में लगाएं तो फायदा मिलेगा। बिजनसमैन अपने धंधे में नई तकनीकें अपना सकते हैं।

कर्कः आज का दिन आपके लिए स्पेशल साबित हो सकता है। किसी एक ही तरकीब पर काम करना काफी रहेगा। आज कोई रिस्क न लें। परिवार में मौजूद आपके विरोधी फिलहाल कुछ समय तक सिर नहीं उठा पाएंगे।

सिंहः दिन बहुत अच्छा बीतेगा। दिल में कोई बात या नया आइडिया हो तो फौरन आगे बढ़ें फायदा जरूर होगा। दोस्तों के साथ रहने से फायदा हो सकता है। किसी कारण घरवालों से बहस हो सकती है।

कन्याः आज आपका दिन काफी बिजी कर देने वाला होगा। दिमाग से किए गए काम का फायदा होगा। अगर आप दूसरों की मदद करेंगे तो आपकी मदद करने वाले भी आएंगे। ईमानदारी से जो काम करेंगे वह फलदायक रहेगा।

तुलाः आपको दिन के पहले हिस्से मे फोन कॉल्स के जरिए आज कोई खुशखबरी मिलेगी। ऑफिस के साथी भी टीमवर्क से खुश होंगे। लेनदेन और बिजनस में खतरा हो सकता है। खर्च भी बढ़ सकता है।

वृश्चिकः दिन के पहले हिस्से में मेहनत कुछ ज्यादा ही करनी होगी। शाम तक मुनाफे के कई मौके आएंगे। घूमने फिरने के मौके जब भी आते हैं आप हमेशा तैयार रहते हैं। ऐसा ही मौका आज शाम को भी है।

धनुः आज आपका टाइम अच्छा है इसका पूरा फायदा उठाएं। ऑफिस में साथियों से बहस में न उलझें। आपकी कईं अच्छाएं आज पूरी होंगी। घूमने फिरने से कोई जरूरी कम बन सकता है। रुपये-पैसे से जुड़े काम में अनुभवी लोगों की सलाह लेना फायदेमंद होगा।

मकरः आज आपकी किसी से अनबन न हो इस बात का ध्यान रखें। काम काज में आपकी स्थितियां बेहतर होंगी। बिजनस में मुनाफे की आशा रहेगी। दिन भर काम करने लायक बहुत से काम हैं लेकिन किसे करना है और किसे नहीं यह आपको सोचना है।

कुंभः आज टीमवर्क से काम करने वाला दिन है। ऑफिस में अपने साथियों के साथ मिलकर काम करने से अच्छे रिजल्ट मिलेंगे। बातचीत से कोई नया फायदे का आइडिया आ सकता है। दोस्त के लिए तोहफा खरीदते वक्त अपनी जेब का ख्याल रखें।

मीनः आज का दिन काफी धीमा हो सकता है। आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने से ही फायदा हो सकता है। कोशिश जारी रखें तो अटके हुए काम भी बन जाएंगे। सतर्क होकर अपने काम में जुट जाएं शायद यह संघर्ष का आखिरी दौरा होगा। बाहर फिजूलखर्ची करने के बजाय घरवालों के साथ समय गुजारें क्योंकि आज आपके खर्च वैसे ही ज्यादा होंगे।